खेल का स्वर्णिम मैदान बनता मध्यप्रदेश

हिन्दुस्तान के खेलों में "रोल-मॉडल" हो गया मध्यप्रदेश - बता रही हैं डॉ. स्वाति तिवारी

कोई भी उपलब्धि या सफलता यूं ही आनन-फानन में नहीं मिलती उसके पीछे एक लगन, मेहनत और दूरदृष्टि होती है। हाल ही में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल द्वारा राष्ट्रीय खेल प्रोत्साहन पुरस्कार 2010 से नवाजा गया हैं। इस सफलता और उपलब्धि के पीछे भी मुख्यमंत्री श्री चौहान की लगन और दूरदृष्टि रही है। प्रदेश में इस इच्छाशक्ति, जुनून और जज्बे की शुरूआत 29 अगस्त, 2007 खेल दिवस पर मुख्यमंत्री निवास पर आयोजित पहली खेल पंचायत से ही दिखाई देने लगी थी और आज मध्यप्रदेश हिन्दुस्तान के खेलों में "रोल-मॉडल" हो गया। मध्यप्रदेश में खेलों के विकास की असीम संभावनाओं को देखते हुए मुख्यमंत्री ने अपनी महत्वाकांक्षी पंचायतों में प्रदेश के युवा वर्ग और उनकी क्षमताओं को केन्द्रित कर एक "खेल पंचायत" आयोजित की थी। यह एक महत्वपूर्ण अवसर रहा जिसमें गांव-खेड़े और जिलों से आए खेलप्रेमियों, प्रशंसकों, प्रशिक्षकाओं एवं खिलाड़ियों से सीधा संवाद दिया सुझाव मांगे और उनके आधार पर खेलों और खिलाड़ियों की आधारभूत जरूरतों को समझा गया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने 22 घोषणाएं की। प्रदेश में पारम्परिक खेलों के अलावा क्रिकेट, फुटबाल, बालीबाल और हॉकी जैसे खेल लोकप्रिय है। प्रदेश सरकार ने एक और मलखम्भ को राज्य का खेल घोषित किया वहीं हाकी के लिए भी प्रदेश आगे आया। महिलाओं और निःशक्तजनों को ध्यान में रखते हुए खेलों के विकास की पहल के उल्लेखनीय परिणाम हमारे सामने हैं।

देश में उत्कृष्ट खेल अकादमियों की स्थापना और खेलों को प्रोत्साहन देने के लिए मध्यप्रदेश सरकार द्वारा किए गए प्रशंसनीय कार्य से मध्यप्रदेश सरकार अन्य राज्यों द्वारा अनुकरण करने योग्य एक रोल मॉडल बन गया। प्रदेश में कुछ खेलों पर विशेष फोकस बनाए रखने के लिए विभिन्न 16 खेल अकादमियां स्थापित की गईं। इन अकादमियों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे खिलाड़ियों ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लगभग 33 पदक, राष्ट्रीय स्तर पर 596 पदक और राज्य स्तर पर 624 पदक अर्जित किए हैं। राज्य की घुड़सवारी अकादमी के खिलाड़ियों ने दिल्ली में 4 से 11 अप्रैल तक आयोजित हार्स शो 2010 में रिकार्ड बनाते हुए 17 पदक जीते, जिसमें दो स्वर्ण, दो रजत, 13 कांस्य पदक हैं। राज्य सरकार द्वारा अन्तराष्ट्रीय स्तर पर शूटिंग में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए आधुनिक अधोसंरचना एक उच्च स्तरीय प्रशिक्षण सुविधा से मुक्त मध्यप्रदेश राज्य शूटिंग एकेडमी की स्थापना की गई। परिणाम स्वरूप एकेडमी के छः खिलाड़ियों जर्मनी, चैक गणराज्य दोहा में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय शूटिंग चैम्पियनशिप में भार का प्रतिनिधित्व किया कहावत है, "ताल तो भोपाल ताल बाकि सब तलैया" पूरे भारत में भोपाल अपने बड़े तालाब और झीलों के लिए प्रसिद्ध है। राज्य सरकार द्वारा नए प्रशिक्षुओं को वाटर स्पोर्ट्स के कौशल में निपुर्ण करने के लिए राज्य सरकार ने वाटर स्पोर्ट्स की स्थापना की। मध्यप्रदेश मार्शल आर्ट अकादमी भोपाल में स्थापित की गई जो आत्मरक्षा के उपायों तथा विषम परिस्थितियों व स्व-सहायता के व्यक्ति को सक्षम बनाती है। क्रिकेट और हॉकी जैसे खेल किसी भी प्रदेश में नहीं विश्व में अपनी अलग पहचान रखते हैं। बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी में समान लोकप्रिय इस खेल के लिए प्रोत्साहन और प्रशिक्षण दोनों महत्वपूर्ण है अतः मध्यप्रदेश क्रिकेट अकादमी की स्थापना ग्वालियर में की गई वहीं हमारे राष्ट्रीय खेल हॉकी में मध्यप्रदेश ने अपनी पहचान बनाई है एवं मध्यप्रदेश हॉकी एकेडमी की स्थापना हुई है।

इतना ही नहीं हमारे पास अब अपना खेल गांव भी है। म.प्र.में खेलों के लिए अब तक जो व्यवस्थाएं, जो सुविधाएं है, उनमें सोने पर सुहागा की तरह होगा खेलगांव। अंतर्राष्ट्रीय स्तर का आधुनिकतम स्टेडियम, कोर्ट, 18 होल गोल्फ कोर्स, मल्टीपरपज इंडोर हॉल, बैडमिंटन के चार कोर्ट खो-खो, हैंडबाल, फुटबाल और हाकी इत्यादि के आउटडोर, पिचेस के साथ-साथ ऐसी कई अन्य सुविधाएं देंने वाले खेलग्राम की परिकल्पना भोपाल के निकट सतगढ़ी ग्राम में साकार होने जा रही है। खेल गांव अगर अपनी संकल्पना के अनुरूप आकार लेता है तो वह दिन दूर नहीं जब प्रदेश को नेशनल गेम्स आयोजित करने का मौका मिलेगा। अखाड़ों के करतब हमारे देशी खेलों के रूप में जाने जाता है। देशी खेलों को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से मलखम्ब को राज्य खेल का दर्जा दिया गया है। यह भारत का प्राचीनतम देशी खेल है जो हमारी संस्कृति से जुड़ा हुआ है। अभी मल्लखम्ब प्रशिक्षण के लिए 13 जिलों में केन्द्र स्थापित किए गए हैं। मप्र सरकार ने अपने प्राचीन खेल को संरक्षित करके अपनी परम्परागत विद्या को एक नई पहचान दी है। प्रदेश में खेल और खिलाड़ियों की बेहतरी के लिए खेल बजट को पांच सालों में चार करोड़ से 80 करोड़ तक बढ़ा दिया है। वर्ष 2004 में खेल विभाग का बजट महज चार करोड़ रुपए था जो अब 80 करोड़ रुपए हो गया है। मुख्यमंत्री प्रदेश को स्वस्थ नागरिक देना चाहते हैं। तन स्वस्थ तो मन स्वस्थ, मन स्वस्थ तो विकास की गंगा स्वतः अवतरित होगी। तभी तो 70 सूत्रीय जनसंकल्प में खेल प्राधिकरण का गठन एवं खेल सुविधाओं का विस्तार पंचायत स्तर तक किए जाने का प्रावधान है। शिवराज सिंह की खेलों के प्रति संवेदनशीलता 11 जनवरी को भी उजागर हुई थी जब उन्होंने हाकी के हालत ठीक करने के उद्देश्य से हाकी खिलाड़ियों का खर्चा उठाने की घोषणा की थी।मुख्यमंत्री ने पुरस्कार ग्रहण करते हुए इस अवसर पर बताया कि मध्यप्रदेश के लिए यह खुशी की बात है कि राष्ट्रीय खेल प्रोत्साहन पुरस्कार पहली बार किसी राज्य को प्राप्त हुआ। खेल एवं युवा कल्याण विभाग द्वारा पहली राज्य खेल अकादमी वर्ष 2006 में ग्वालियर में राज्य महिला हाकी अकादमी के रूप में प्रारंभ यह श्रृंखला एक दिन मध्यप्रदेश को खेलों के लिए भी स्वर्णिम प्रदेश बना देगी ऐसी शुभकामनाएं और विश्वास।

(लेखिका जानी मानी साहित्यकार हैं)